www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

स्त्रियों का गायत्री अधिकार

लेखक :
श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
मथुरा (उ० प्र०)

२००६

मूल्य : ४.०० रुपया

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

प्रकाशक .

युग निर्माण योजना

गायत्री तपोभूमि

मथुरा (उ० प्र०)

कन्या और पुत्र दोनों ही माता की प्राणप्रिय संतान हैं। ईश्वर को नर और नारी दोनों दुलारे हैं। कोई भी निष्पक्ष और न्यायशील माता–पिता अपने बालकों में इसलिए भेदभाव नहीं करते कि वे कन्या हैं या पुत्र हैं। ईश्वर ने धार्मिक कर्त्तव्यों एवं आत्मकल्याण के साधनों की नर और नारी दोनों को ही सुविधा दी है। यह समता, न्याय और निष्पक्षता की दृष्टि से उचित है, तर्क और प्रमाणों से सिद्ध है। इस सीधे–सीधे तथ्य में कोई विघ्न डालना असंगत ही होगा।

ISBN
81-89309-03-×

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस,

मथुरा (उ० प्र०)

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्त्रियों का गायत्री अधिकार

स्त्रियों को गायत्री का अधिकार

भारतवर्ष में सदा से स्त्रियों का समुचित मान रहा है उन्हें पुरुषों की अपेक्षा अधिक पवित्र माना जाता रहा है। स्त्रियों को बहुधा 'देवी' संबोधन से संबोधित किया जाता है। नाम के पीछे उनकी जन्म–जात उपाधि 'देवी' प्रायः जुड़ी रहती है। शांति देवी, गंगादेवी, दया देवी आदि 'देवी' शब्द पर कन्याओं के नाम रखे जाते हैं। जैसे पुरुष बी० ए० शास्त्री साहित्यरत्न आदि उपाधियाँ उत्तीर्ण करने पर अपने नाम के पीछे उस पदवी को लिखते हैं वैसे ही कन्याएँ अपने जन्मजात ईश्वर की प्रदत्त दैवी गुणों, दैवी विचारों दिव्य विशेषताओं के कारण अलंकृत होती हैं।

देवताओं और महापुरुषों के साथ उनकी अर्धांगनियों के नाम भी जुड़े हैं, सीताराम, राधेश्याम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण, उमामहेश, मायाब्रह्म, सावित्री सत्यवान आदि नामों में नारी का पहला और नर का दूसरा स्थान है। पतिव्रता, दया, करुणा, सेवा, सहानुभूति, स्नेह, वात्सल्य, उदारता, भक्ति–भावना आदि गुणों में नर की अपेक्षा नारी को सभी विचारवानो ने बढा–चढ़ा माना है।

इसलिए धार्मिक, आध्यात्मिक और ईश्वर–प्राप्ति संबंधी कार्यों में नारी का सर्वत्र स्वागत किया गया है और उसे उनकी महानता के अनुकूल प्रतिष्ठा दी गई है। वेदो पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट हो जाता है कि वेदों के मंत्रदृष्टा जिस प्रकार

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अनेक ऋषि हैं, वैसे ही अनेक ऋषिकाएँ भी हैं। ईश्वरीय–ज्ञान वेद, महान आत्मा वाले व्यक्तियों पर प्रकट हुआ है और उनने उन मंत्रों को प्रकट किया। इस प्रकार जिन पर वेद प्रकट हुए उन मंत्र दृष्टाओं को 'ऋषि' कहते हैं। ऋषि केवल पुरुष ही नहीं हुए हैं, ऋषि अनेक नारियाँ भी हुई हैं। ईश्वर ने नारियों के अंतःकरण में उसी प्रकार वेद–ज्ञान प्रकाशित किया जैसे कि पुरुष के अंतःकरण में, क्योंकि प्रभु के लिए दोनों ही संतान समान हैं। महान् दयालु, न्यायकारी और निष्पक्ष प्रभु भला अपनी ही संतान में नर–नारी का पक्षपात करके अनुचित भेद–भाव कैसे कर सकते हैं ?

ऋग्वेद १०।८५ के संपूर्ण मंत्रों की ऋषिकाएँ ''सूर्या सावित्री'' है। ऋषि का अर्थ निरुक्त में इस प्रकार किया है ''ऋषिदर्शनात् स्तोमान् ददर्शेति ऋषियो मन्त्र दृष्टारः।'' अर्थात् मंत्रों का दृष्टा उनके रहस्यों को समझकर प्रचार करने वाला ऋषि होता है।

ऋग्वेद की ऋषिकाओं की सूची ब्रह्म देवता के २४ अध्याय में इस प्रकार है–

घोषा गोधा विश्ववारा अपालोपनिषन्नित्।
ब्रह्म जाया जहुर्नाम अगस्त्यस्य स्वसादिति॥ ८४॥
इन्द्राणी चेन्द्र माता चा सरमा रोमशोर्वशी।
लोपामुद्रा च नद्यश्च यमी नारी च शाश्वती॥ ८५॥
श्रीलछमीः सार्पराज्ञी वाकश्रद्धा मेधाचदक्षिण।
रात्रि सूर्या च सावित्री ब्रह्मवादिन्य ईरितः॥ ८६॥

अर्थात्–घोषा, गोधा, विश्ववारा, अपाला, उपनिषद्, जुहू, आदिति, इन्द्राणी, सरमा, रोमशा, उर्वशी, लोपामुद्रा, यमी, शाश्वती, सूर्या, सावित्री आदि ब्रह्मवादिनी हैं।

ऋग्वेद के १०–१३४, १०–३९, १९–४०, ८–९१,

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

१०–५, १०–१०७, १०–१०९, १०–१५४, १०–१५९, १०–१८९, ५–२८, ८–९१ आदि सूक्तों की मंत्र दृष्टा यह ऋषिकाएँ हैं।

ऐसे अनेक प्रमाण मिलते हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह यज्ञ करती और कराती थीं। वे यज्ञ–विद्या, ब्रह्म–विद्या में पारंगत थीं। कई नारियाँ तो इस संबंध में अपने पिता तथा पति का मार्ग दर्शन करती थीं।

तैत्तिरीय ब्राह्मण में सोम द्वारा 'सीता सावित्री' ऋषिका को तीन वेद देने का वर्णन विस्तारपूर्वक आता है।

.....तं त्रयो वेदा अन्य सृज्यन्त अथह सीतां सावित्री सोम राजान चक्रमे .....तस्या उहत्रीन वेदान प्रददौ।

–तैत्तिरीय० २। ३। १०

इस मंत्र में बताया गया है कि किस प्रकार सोम ने सीता सावित्री को तीन वेद दिए।

मनु की पुत्री 'इडा' का वर्णन करते हुए तैत्तिरीय १–१–४ में उसे 'यज्ञान्काशिनी' बताया है यज्ञान्काशिनी का अर्थ सायणाचार्य ने 'यज्ञ तत्व प्रकाशन समर्था' किया है। इडा ने अपने पिता को यज्ञ संबंधी सलाह देते हुए कहा–

साऽब्रवीदिड़ा मनुम्। तथावाऽएं तवाग्नि माधास्यामि यथा प्रजथा पशुभिर्मिथुनैजनिष्यसे। प्रत्यस्मिंलोकेरथास्यासि। असि सुवर्ग लोक जेष्यसोति। –तैत्तिरीय ब्रा० १। ४

इडा ने मनु से कहा–तुम्हारी अग्नि का ऐसा अवधान करूँगी जिससे तुम्हें भोग, प्रतिष्ठा और स्वर्ग प्राप्त हो।

प्राचीन समय में स्त्रियाँ गृहस्थाश्रम चलाने वाली भी थीं और ब्रह्म परायण भी। वे दोनों ही अपने–अपने कार्य–क्षेत्र में कार्य करतीं थीं। जो गृहस्थ संचालन करतीं थीं उन्हें 'सद्योबधू' कहते थे और जो वेदाध्ययन, ब्रह्म–उपासना आदि के पारमार्थिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कार्यों में प्रवृत्त रहतीं थीं उन्हें 'ब्रह्मवादिनी' कहते थे। ब्रह्मवादिनी और सद्योवधू के कार्यक्रम तो अलग–अलग थे, पर उनके मौलिक धर्माधिकारियों में कोई अंतर न था, देखिए–

द्विविधा स्त्रियो ब्रह्मवादिन्यः सद्योवध्वश्च। तत्र ब्रह्मवादिनी नामुण्यानाम् अग्नोन्धनं स्वगृहे भिक्षाचर्या च। सद्योवधूनां तूपस्थते विवाहेकाले विदुपनयन कृत्वा विवाह कार्यः।

–हरीत धर्मसूत्र २१। २०। २४

ब्रह्मवादिनी और सद्योवधू ये दो स्त्रियाँ होती हैं। इनमें से ब्रह्मवादिनी यज्ञोपवीत, अग्निहोत्र, वेदाध्ययन तथा स्वगृह में भिक्षा करती हैं। सद्योवधुओं का भी यज्ञोपवीत आवश्यक है। वह विवाह काल उपस्थित होने पर करा देते हैं।

शतपथ ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य ऋषि की धर्मपत्नि मैत्रेयी को ब्रह्मवादिनी कहा है।

तयोर्हू मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव:।

अर्थात्–मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी थी। ब्रह्मवादिनी का अर्थ वृहदारण्यक उपनिषद् का भाष्य करते हुए श्री शंकराचार्य जी ने 'ब्रह्मवादन शीला' किया है। ब्रह्म का अर्थ है–वेद ब्रह्मवादन शील अर्थात् वेद का प्रवचन करने वाली।

यदि ब्रह्म का अर्थ ईश्वर लिया जाए तो भी ब्रह्म प्राप्ति, बिना वेद ज्ञान के नहीं हो सकती। इसलिए ब्रह्म को वही जान सकता है जो वेद पढ़ता है देखिए–

ना वेद विन्मनुते तं वृहन्तम्। –तैत्तरीय०

एतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विवदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेन।

–वृहदारण्यक ४। ४। २

जिस प्रकार पुरुष ब्रह्मचारी रहकर तप, स्वाध्याय, योग

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

द्वारा ब्रह्म को प्राप्त करते थे, वैसे ही कितनी ही स्त्रियाँ ब्रह्मचारिणी रहकर आत्म–निर्माण एवं परमार्थ का संपादन करती थीं।

पूर्वकाल में अनेक सुप्रसिद्ध ब्रह्मचारिणी हुई हैं, जिनकी प्रतिभा और विद्वता की चारों ओर कीर्ति फैली हुई थी। महाभारत में ऐसी अनेक ब्रह्मचारिणियों का वर्णन आया है।

भरद्वाजस्य दुहिता रूपेण प्रतिमा भुवि।
श्रुतावती नाम विभोकुमारी ब्रह्मचारिणी॥

–महाभारत शल्य पर्व ४८। २

भारद्वाज की श्रुतावती नामक कन्या थी, जो ब्रह्मचारिणी थी। कुमारी के साथ–साथ ब्रह्मचारिणी शब्द लगाने का तात्पर्य यह है कि वह अविवाहित और वेदाध्ययन करने वाली थी।

अत्रैव ब्राह्मणी सिद्धा कौमार ब्रह्मचारिणी।
योग युक्तादिव भाता, तपः सिद्धा तपस्विनी॥

–महाभारत शल्य पर्व ५४। ६

योग सिद्धि को प्राप्त कुमार अवस्था से ही वेदाध्ययन करने वाली तपस्विनी, सिद्धा नाम की ब्राह्मणी मुक्ति को प्राप्त हुई।

वभूव श्रीमती राजन् शांडिल्यस्य महात्मनः।
सुता धृतव्रता साध्वी, नियता ब्रह्मचारिणी॥
साधु तप्त्वा तपो घोरे दुश्चरं स्त्री जनेन ह।
गता स्वर्ग महाभागा देव ब्राह्मण पूजिता॥

–महाभारत शल्य पर्व ५४। ९

महात्मा शांडिल्य की पुत्री 'श्रीमती' थी, जिसने व्रतों को धारण किया। वेदाध्ययन में निरंतर प्रवृत्त थी। अत्यंत कठिन तप करके वह देवी ब्राह्मणों से पूजित हुई और स्वर्ग सिधारी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अत्र सिद्धा शिवा नाम ब्राह्मणी वेद पारगा।
अधीत्य सकलान् वेदान लेभेऽसन्देहमक्षयम्॥

–महाभारत उद्योग पर्व १९०। १८

शिवा नामक ब्राह्मणी वेदों में पारंगत थी, उसने सब वेदों को पढ़कर मोक्ष पद प्राप्त किया।

महाभारत शन्ति पर्व अध्याय ३२० में 'सुलभा' नामक ब्रह्मवादिनी सन्यासिनी का वर्णन है, जिसने राजा जनक के साथ शास्त्रार्थ किया था। इसी अध्याय के श्लोक ८२ में सुलभा ने अपना परिचय देते हुए कहा है–

प्रधानो नाम राजर्षि व्यक्तं ते श्रोतमागतः।
कुले तस्य समुत्पन्ना सुलभां नाम विद्धि माम्॥
सोहं तस्मिन् कुले जाता भर्तर्यसति मद्विधे॥
विनीता मोक्षधमषु धराम्येका मुनिव्रतम्॥

–महाभारत शांति पर्व ३२०। ८२

मैं सुप्रसिद्ध क्षत्रिय कुल में उत्पन्न सुलभा हूँ। अपने अनुरूप पति के न मिलने से मैंने गुरुओं से शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त करके संन्यास ग्रहण किया है।

पाण्डव–पत्नी द्रौपदी की विद्वत्ता का वर्णन करते हुए श्री आचार्य आनंदतीर्थ (माधवाचार्य जी) ने ''महाभारत निर्णय'' में लिखा है–

वेदाश्चप्युत्तम स्त्रीभिःकृष्णात्ताभिरिहाखिलाः।

अर्थात् उत्तम स्त्रियों को कृष्णा (द्रौपदी) की तरह वेद पढ़ने चाहिए।

तेभ्यादधार कन्ये द्वे, वपुनां धारिणी स्वधा।
उभे ते ब्रह्मवादिन्यौ, ज्ञान विज्ञान पारगे॥

–भागवत ४। १। ६४

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

''स्वधा की दो पुत्रियाँ हुईं, जिनके नाम वपुनां और धारिणी थे। वे दोनों ही ज्ञान और विज्ञान में पूर्ण पारंगत तथा ब्रह्मवादिनी थीं।''

विष्णु–पुराण १।१० और १८।१९ में मार्कण्डेय पुराण अ०–२२ में भी इस प्रकार ब्रह्मवादिनी (वेद और ब्रह्म का उपदेश करने वाली) महिलाओं का वर्णन है।

सततं मूर्तिमन्तश्य वेदश्चत्वार एव च।
सन्ति यभ्याश्च जिह्वग्रै याच वेदवतीस्मृता॥

–ब्रह्म वै० प्रकृति १४ खण्ड ६५

उसे चारों वेद कण्ठाग्र थे, इसलिए उसे वेदवती कहा जाता था।

इस प्रकार की नैष्ठिक ब्रह्मचारिणी ब्रह्मवादिनी नारियाँ अगणित थीं। इनके अतिरिक्त गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाली कन्याएँ दीर्घकाल तक ब्रह्मचारिणी रहकर वेद शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के उपरांत विवाह करती थीं तभी उनकी संतान संसार में उज्ज्वल नक्षत्रों की तरह यशस्वी, पुरुषार्थी और कीर्तिमान होती थीं। धर्म–ग्रंथ का स्पष्ट आदेश है कि कन्या ब्रह्मचारिणी रहने के उपरांत विवाह करे।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवान विन्दते पतिम्॥

अर्थात् कन्या ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान करती हुई उसके द्वारा उपयुक्त पति को प्राप्त करती है।

ब्रह्मचर्य केवल अविवाहित रहने को ही नहीं कहते हैं। ब्रह्मचारी वह है, जो संयमपूर्वक वेद की प्राप्ति में निरत है। देखिए–

स्वीकरोति यदा वेदं, चरेद् वेद व्रतानिव।
ब्रह्मचारी भवेत्तावद्, ऊर्ध्व स्नातो गृही भवेत्॥

–दक्ष स्मृति

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अर्थात् जब वेद को अर्थ सहित पढ़ता है और उसके लिए व्रतों को ग्रहण करता है तब ब्रह्मचारी कहलाता है उसके पश्चात् विद्वान बनकर गृहस्थ में प्रवेश करता है।

अथर्ववेद ११७।१७ की व्याख्या करते हुए सायणाचार्य ने लिखा है।

''ब्रह्मचर्येण ब्रह्म वेदः तदध्ययनार्थमाचर्यम्।''

अर्थात् 'ब्रह्मवेद का अर्थ है उस वेद के अध्ययन के लिए जो प्रयत्न किए जाते हैं, ब्रह्मचर्य हैं।' इसी सूक्त के प्रथम मंत्र की व्याख्या में सायणाचार्य ने लिखा है–

'ब्रह्मणि वेदोत्यके ध्येयतव्ये वा चारितुंशीलस्य तथोक्तः।'

अर्थात् ब्रह्मचारी वह है, जो वेद के अध्ययन में विशेष रूप से संलग्न है। महर्षि गार्ग्यायाणाचार्य ने प्रणववाद में कहा है–

''ब्रह्मचारिणां च ब्रह्मचारिणीभिः सह विवाह प्रशस्यो भवति।''

अर्थात् ब्रह्मचारियों का विवाह ब्रह्मचारिणियों से ही होना उचित है, क्योंकि ज्ञान और विद्या आदि की दृष्टि से दोनों के समान रहने पर ही वह सुखी और संतुष्ट रह सकते हैं। भारत में भी इसी बात की पुष्टि की गई है।

यथोरेव समं वित्तं यथोरेव सम श्रुतम्।
तयोमैत्री विवाहश्च न तु पुष्ट विपुष्टयोः॥

–महाभारत १।१३१।१०

जिनका वित्त एवं ज्ञान समान है उनसे मित्रता और विवाह उचित है, न्यूनाधिक में नहीं।

ऋग्वेद १।१।५ का भाष्य करते हुए महर्षि दयानंद ने लिखा है–

याः कन्या यावच्चतर्विंशति वर्षमायस्तावद ब्रह्मचर्येण

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जितेन्द्रिय तथा सांगोपांग वेद विद्या अधीयत्रे ता मनुष्य जाति मषिका भविन्त।

अर्थात् जो कन्याएँ २३ वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक सांगोपांग वेद विद्याओं को पढ़ती हैं वे मनुष्य जाति को शोभित करती हैं।

ऋग्वेद ५।६२।११ के भाष्य में महर्षि ने लिखा है–

ब्रह्मचारिणी प्रसिद्ध कीर्ति सत्पुरुषं सुशीलं शुभ गुण रूप समन्वितं प्रीतिमन्तं पतिग्रहीतुभिच्छेत् तथैव ब्रह्मचार्यापि स्वसदृशीमेव ब्रह्मचारिणीं स्त्रियं गृहस्थीयात्।

अर्थ–ब्रह्मचारिणी स्त्री कीर्तिवान्, सुशील, सत्पुरुष, गुणवान्, प्रेमी स्वभाव के पति की इच्छा करे, वैसे ही ब्रह्मचारी भी अपने समान ब्रह्मचारिणी (वेद और ईश्वर की ज्ञाता) स्त्री को ग्रहण करे।

जब विद्याध्ययन करने के लिए कन्याओं को पुरुषों की ही भाँति सुविधा थी, तभी इस देश की नारियाँ गार्गी और मैत्रेयी की तरह विदुषी होती थीं। याज्ञवल्क्य जैसे ऋषि को एक नारी ने शास्त्रार्थ में विचलित कर दिया था और उनने हैरान होकर धमकी देते हुए कहा था–'अधिक प्रश्न मत करो अन्यथा तुम्हारा अकल्याण होगा।'

इसी प्रकार शंकराचार्यजी को भारती देवी के साथ शास्त्रार्थ करना पड़ा था। उस भारती देवी महिला ने शंकराचार्यजी से ऐसा अद्भुत शास्त्रार्थ किया था कि बड़े–बड़े विद्वान् भी अचंभित रह गए थे। उनके प्रश्नों का उत्तर देने के लिए शंकराचार्य को निरुत्तर होकर एक मास की मोहलत माँगनी पड़ी थी। शंकर–दिग्विजय में भारती देवी के संबंध में लिखा है–

सर्वाणि शास्त्राणि षडंग वेदान्,
काव्यादिकान् वेत्ति, परञ्च सर्वम्।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तन्नास्ति नो वेत्ति यदत्र वाला,
तस्माद्भूच्चित्र पदं जनानाम्॥

शंकर–दिग्विजय ३। १६

''भारती देवी सर्वशास्त्र तथा अंगों सहित सब वेदों और काव्यों को जानती थी। उससे बढ़कर श्रेष्ठ और विद्वान् स्त्री और न थी।''

आज जिस प्रकार स्त्रियों के शास्त्राध्ययन पर रोक लगाई जाती है, यदि उस समय ऐसे प्रतिबंध होते तो याज्ञवल्क्य और शंकराचार्य से टक्कर लेने वाली स्त्रियाँ किस प्रकार हो सकती थीं ? प्राचीन काल में अध्ययन की सभी नर–नारियों को समान सुविधा थी।

स्त्रियों के यज्ञ का ब्रह्मा बनने तथा उपाध्याय एवं आचार्य होने के प्रमाण मौजूद हैं। ऋग्वेद में नारी को संबोधन करके कहा गया है कि तू उत्तम आचरण द्वारा 'ब्रह्मा' का पद प्राप्त कर सकती है।

अधः पश्यस्वः मोपरि सन्तरां पादकौ हर।
मा ते कशप्लकौदृशन् स्त्री हि ब्रह्मा विभूविथ॥

–ऋग्वेद ८। ३३। १९

अर्थात्–हे नारी ! तुम नीचे देखकर चलो। व्यर्थ में इधर–उधर की वस्तुओं तथा व्यक्तियों को मत देखती रहो। अपने पैरों को सावधानी तथा सभ्यता से रखो। वस्त्र इस प्रकार पहनो कि लज्जा के अंग ढके रहें। इस प्रकार उचित आचरण करती हुई तुम निश्चय ही ब्रह्मा की पदवी पाने योग्य बन सकती हो।

अब यह देखना है कि ब्रह्मा का पद कितना उच्च है और उसे किस योग्यता का मनुष्य प्राप्त कर सकता है ?

ब्रह्मा वा ऋत्विजाम्भिषक्तमः। शतपथ १। ७। ४। १९

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अर्थात्–ब्रह्मा ऋत्विजों की त्रुटियों को दूर करने वाला होने से सब पुरोहितों से ऊँचा है।

तस्योद्यो ब्रह्मानिष्ठः स्यात् तं ब्रह्माणं कुर्वीत्।

–गोपथ उत्तरार्ध १। ३

अर्थात्–जो सबसे अधिक ब्रह्मनिष्ठ (परमेश्वर और वेदों का ज्ञाता) हो, उसे ब्रह्मा बनाना चाहिए।

अथ केन ब्रह्मत्वं क्रियते इति त्रय्या विद्ययेति।
त्रय्या विद्ययेति ह ब्रूयात्॥

–ऐतेरेय ५। ३३

ज्ञान, कर्म, उपासना तीनों विद्याओं के प्रतिपादक वेदों के पूर्ण ज्ञान से ही मनुष्य ब्रह्मा बन सकता है।

अथ केन ब्रह्मत्वं क्रियते इत्यनया।

–शतपथ ११। ५। ५७

वेदों के पूर्ण ज्ञान (त्रिविध विद्या) से ही मनुष्य ब्रह्मा पद के योग्य बनता है।

व्याकरण शास्त्र के कतिपय स्थलों पर ऐसे उल्लेख हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि वेद का अध्ययन अध्यापन भी स्त्रियों का कार्यक्षेत्र रहा है। देखिए–

''इवञ्च। ३। ३। २१'' के महाभाष्य में लिखा है

''उपेत्याधीयतेऽस्या उपाध्याया उपाध्याय''

अर्थात् जिनके पास आकर कन्याएँ वेद के एक भाग तथा वेदांगा का अध्ययन करें, वह उपाध्यायी या उपाध्याया कहलाती है।

मनु ने भी उपाध्याय के लक्षण यही बताए हैं–

एक देश तु वेदस्यंगन्यपि वा पुनः।
योऽध्यापयति तृप्त्यर्थम् उपाध्यायः सा उच्यते॥ २। १४१

जो वेद के एक देश या वेदांग को पढ़ाता है, वह उपाध्याय

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कहा जाता है और भी देखिए–

आचार्यादजन्वं। अष्ठाध्यायी। ४। ३। २। ४९

इस सूत्र पर सिद्धांत कौमुदी में कहा गया है–

''आचार्य स्त्री आचार्यानी पुंयोग इत्येव आचार्या स्वयं व्याख्यात्री।''

अर्थात् जो स्त्री वेदों का प्रवचन करने वाली हो, उसे आचार्या कहते हैं। आचार्य के लक्षण मनु जी ने इस प्रकार बताए हैं–

उपनीय तु यः शिष्य वेदमध्यापयेद् द्विजः।
संकल्पं सरहस्यं च तमाश्चार्य प्रचक्षते॥

''जो शिष्य का यज्ञोपवीत संस्कार करके संकल्प सहित, रहस्य सहित पढ़ाता है, उसे आचार्य कहते हैं।''

स्वर्गीय महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त शर्मा ने सिद्धांत–कौमुदी का संपादन करते हुए इस संबंध में महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए लिखा–

''.....इति वचनेमापि स्त्रीणांवेदाध्ययनाधिकारो ध्वनितः।''

अर्थात् इससे स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार विदित होता है।

उपयुक्त प्रमाणों को देखते हुए पाठक यह विचार करें कि स्त्रियों को गायत्री का अधिकार नहीं है, कहना कहाँ तक उचित है ?

क्या स्त्रियों को वेद का अधिकार नहीं ?

गायत्री मंत्र का स्त्रियों को अधिकार है या नहीं ? यह कोई स्वतंत्र प्रश्न नहीं है। अलग से कहीं ऐसा विधि–निषेध नहीं कि स्त्रियाँ गायत्री जपें या न जपें। यह प्रश्न इसलिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उठता है कि–यह कहा जाता है कि स्त्रियों को वेद क अधिकार नहीं है। चूँकि गायत्री भी वेद मंत्र है, इसलिए अन्य मंत्रों की भाँति उसके उच्चारण का अधिकार नहीं होना चाहिए।

स्त्रियों को वेदाधिकारी न होने का प्रतिबंध वेदों में नहीं है। वेदों में तो ऐसे कितने ही मंत्र हैं, जो स्त्रियों द्वारा उच्चारण होते हैं। उन मंत्रों में स्त्री लिंग की क्रियाएँ हैं जिससे स्पष्ट हो जाता है कि वे स्त्रियों द्वारा ही प्रयोग होने के लिए हैं, देखिए–

''उदसौ सूर्यो अगाद्, उदयं मामको भगः अह,
तद्विद बला पतिमन्य साक्षि विषा सहि॥
अह केतु रह मूर्धाहमुग्रा बिवचनी,
ममेदनु कृतुं पतिः सेहा नाया उपाचरेत्॥''
''मम पुत्रा शत्रुहणेऽथे मे दुहिता विराट्।
उताहमस्मि सं जया पत्यौ म श्लोक उत्तमः॥''

–ऋग्वेद १०। १५९। २–३

अर्थ–सूर्योदय के साथ मेरा सौभाग्य बढ़े। मैं पतिदेव को प्राप्त करूँ। विरोधियों को पराजित करने वाली और सहनशीलता बनूँ। मैं वेद से तेजस्विनी प्रभावशाली वक्ता बनूँ। पतिदेव मेरी इच्छा, ज्ञान व कर्म के अनुकूल कार्य करें। मेरे पुत्र भीतरी व बाहरी शत्रुओं को नष्ट करें। मेरी पुत्री अपने सद्गुणों के कारण प्रकाशवान् हों। मैं अपने कार्यों से पतिदेव के उज्ज्वल यश को बढ़ाऊँ।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पति वेदनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः॥

–यजु० ३। ६०

अर्थात् हम कुमारियाँ उत्तम पतियों को प्राप्त कराने वाले परमात्मा का स्मरण करती हुईं यज्ञ करती हैं जो हमें इस

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पितृकुल से छुड़ा दे, किंतु पति कुल से कभी वियोग न कराए।

आशा सान्तं सौमनसं प्रजां सौभाग्यं रयिम्।
अग्निरनुव्रता भूत्वा सन्नह्ये सुकृतायकम्॥

–अथर्व १४। २। २५

वधू कहती है कि मैं यज्ञादि शुभ अनुष्ठानों के लिए शुभ वस्त्र पहिनती हूँ। सदा सौभाग्य, आनंद–धन तथा संतान की कामना करती हुई मैं सदा प्रसन्न रहूँगी।

वेदोऽसवित्तरसि वेदसे त्वा वेदोमे विन्द विदेय।
घृतवन्तं कुलायिनं रास्यपोषं सहस्त्रिणम्।
वेदोवाजं ददातु मे वेदोवीरं तदातु मे॥

–काठक संहिता ५। ४। २३–

आप वेद हैं सब श्रेष्ठ गुणों और ऐश्वर्यों को प्राप्त कराने वाले ज्ञान लाभ के लिए आपको भली प्रकार प्राप्त करूँ। वेद मुझे तेजस्वी, कुल को उत्तम बनाने वाला, ऐश्वर्य बढ़ाने वाला ज्ञान दें। वेद मुझे वीर श्रेष्ठ संतान दें।

विवाह के समय वर–वधू दोनों सम्मिलित रूप से मंत्र उच्चारण करते हैं–

समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानिनौ।
सं मातरिश्वा संधाता समुद्रेष्ट्री दधातु नौ॥

–ऋग्वेद १०। ८५। ४७

अर्थात् सब विद्वान लोग यह जान लें कि हम दोनों के हृदय, जल की तरह परस्पर प्रेमपूर्वक मिले रहेंगे। विश्व नियंता परमात्मा तथा विदुषी देवियाँ हम दोनों के प्रेम को स्थिर बनाने में सहायता करें।

स्त्री के मुख से वेद मंत्रों के उच्चारण के लिए असख्यों प्रमाण भरे पड़े हैं। शतपथ ब्राह्मण १४। १४। १६ में पत्नी द्वारा यजुर्वेद के ३३। २७ मंत्र ''तष्ट्र मन्तस्वा सयेम.....'' इस

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मंत्र को पत्नी द्वारा उच्चारण करने का विधान है।

शतपथ के ४।९।२।२।१ तथा १।९।२।२२–२३ में स्त्रियों द्वारा यजुर्वेद के २३।२४।२५।२५।२७।२९ मंत्रों के उच्चारण का आदेश है।

तैत्तरीय संहिता के १।१।१० सुप्रजसस्त्वी वयं, आदि मंत्रों को स्त्री द्वारा बुलवाने का आदेश है।

आश्वलायन गृह्य सूत्र १।१।९ **'पाणि गृह्यादि गह्य.....'** में भी इसी प्रकार यजमान की अनुपस्थिति में उनकी पत्नी पुत्र अथवा कन्या को यज्ञ करने का आदेश है।

काठक गृह्य सूत्र ३।१।३० एवं २७।३ में स्त्रियों के लिए वेदाध्ययन, मंत्रोच्चार एवं वैदिक कर्मकांड करने का प्रतिपादन है। लौगाक्षि गृह्य सूत्र की २५वीं कण्डिका में ऐसे ही प्रमाण मौजूद हैं।

पारस्कर गृह्य सूत्र १।५।१।२ के अनुसार विवाह के समय कन्या लाजा होम के मंत्रों को स्वयं पढ़ती है। सूर्य-दर्शन के समय भी वह यजुर्वेद ३६।२४ मंत्र, 'तच्चक्षुर्देवहितं' को स्वयं ही उच्चारण करती है। विवाह के समय समञ्जन करते समय वर–वधू दोनों साथ–साथ ''अर्थ नौ समञ्जयति'' इस ऋग्वेद १०।८४।४८। के मंत्र को पढ़ते हैं।

तांड्य ब्राह्मण ५।६।८ में यज्ञ में स्त्रियों को वीणा लेकर सामवेद के मंत्रों का गान करने का आदेश है तथा ५।६।१५ में स्त्रियों को कलश उठाकर वेद मंत्रों का ज्ञान करते हुए परिक्रमा करने का विधान है।

ऐतरेय ५।५।२९ में कुमारी गंधर्व गृहता का उपाख्यान है, जिससे कन्या के यज्ञ एवं वेदाधिकार का स्पष्टीकरण होता है।

श्रद्धात्यायन श्रौत सूत्र १।१७ तथा ४।२२ तथा १०।१३

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तथा ६। ६। ३ तथा १६। ४। १३ तथा १२। ७। २८ तथा २६।७। १ तथा २०। ६। १२,१३ आदि में ऐसे स्पष्ट आदेश हैं कि अमुक वेद मंत्रों का उच्चारण स्त्री करे।

लाट्यायन श्रौत सूत्र में पत्नी को सस्वर सामवेद के मंत्रों के गायन का विधान है।

शांखायन श्रौत सूत्र के १।१२।१३।में तथा आश्वलायन श्रौत सूत्र १।११। १ में इसी प्रकार के वेद मंत्रोच्चारण के आदेश हैं। मंत्र ब्राह्मण के १। २। ३ में कन्या द्वारा वेदमंत्र के उच्चारण की आज्ञा है।

नीचे कुछ मंत्रों में वधू को वेद–परायण होने के लिए कितना अच्छा आदेश दिया हुआ है–

ब्रह्म परं युज्यतां ब्रह्म पूर्व ब्रह्मान्तमो मध्यतो
ब्रह्मं सर्वतः अनाव्याधां देव पुरां प्रपद्य शिवा
स्योना पतिलोके विराज !

–अथर्व १४। ९। ६४

हे वधू ! तेरे आगे, पीछे, मध्य तथा अंत में सर्वत्र वेद विषयक ज्ञान रहे। वेद ज्ञान को प्राप्त करके तदनुसार तू अपना जीवन बना। मंगलमयी सुखदायिनी एवं स्वस्थ होकर पति के घर में विराज और अपने सद्गुणों से प्रकाशवान हो।

कुलायनी धृतवती पुरन्धिः स्योमे सीद सदने।
पृथव्याः। अभित्वा रुदा वसवो गृणन्तु इमा।
ब्रह्म पीपहि सौभगाय अश्विनाध्वर्यू सादयतामिहित्वा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बन कि रुद्र और वसु भी तेरी प्रशंसा करें। सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इन वेद मंत्रों के अमृत का बार–बार भली प्रकार पान कर। विद्वान तुझे शिक्षा देकर इस प्रकार उच्च स्थिति पर प्रतिष्ठित करावें।

यह सर्वविदित है कि यज्ञ बिना वेद मंत्रों के नहीं होता और यज्ञ में पति–पत्नी दोनों का सम्मिलित रहना आवश्यक है। रामचंद्रजी ने सीता की अनुपस्थिति में सोने की प्रतिमा रखकर यज्ञ किया था। ब्रह्माजी को भी सावित्री की अनुपस्थिति से द्वितीय पत्नी को वरण करना पड़ा था क्योंकि यज्ञ की पूर्ति के लिए पत्नी की उपस्थिति आवश्यक है। जब पत्नी यज्ञ करती है, तो उसे वेदाधिकार न होने की बात किस प्रकार कही जा सकती है ? देखिए–

यज्ञो वा एष यौऽपत्नीकः।

तैत्तरीय सं० २२। २। ६

अर्थात् बिना पत्नी के यज्ञ नहीं होता।

अथो अर्धो वा एष आत्मनः यत पत्नी।

तैत्तरीय सं० ३। ३। ३। ५

अर्थात्–पत्नी पति की अर्धांगिनी है। अतः उसके बिना यज्ञ अपूर्ण है।

यां दाम्पत्ति समनसा सुनुत आ य धायतः।
देवासी नित्ययाऽशिरा। –ऋग्वेद ८। ३१। ५१

हे विद्वानो ! जो पति–पत्नी एक मन होकर यज्ञ करते हैं और ईश्वर की उपासना करते हैं वे सदा सुखी रहते हैं।

चित्वा ततस्त्रे मिथुना अवस्यवः दय
गव्यन्ता द्वाजना समूहसि।

ऋग्वेद २। १९। ६

हे परमात्मन ! तेरे नियत यजमान पत्नी समेत यज्ञ करने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं तू उन लोगों को स्वर्ग को प्राप्ति कराता है अतएव वे मिलकर यज्ञ करते हैं।

अग्नि होत्रस्य शुश्रुषा सन्ध्योपासनमेव च।
कार्य पत्न्या प्रतिनिनं बलि कर्म च नैत्यिकम्॥

–स्मृति रत्न

पत्नी प्रतिदिन अग्निहोत्र, संध्योपासन, बलिवैश्य आदि नित्यकर्म करे।

यदि पुरुष न हो तो स्त्री को अकेला भी यज्ञ करने का अधिकार है। देखिए–

होमे कर्तारि स्वस्यासम्भवे पत्नादयः।

–गदाधराचार्य

होम करने में पहले स्वयं यजमान का स्थान है। यह न हो तो पत्नी, पुत्र आदि करें।

पत्नी कुमारः पुत्री व शिष्यो वाऽपि यथाक्रमम्।
पूर्व पूर्वस्य चाभावे विद्वध्यादुत्तरोत्तर॥

–प्रयोग रत्न स्मृति

यजमानः प्रधानस्यात् पत्नी पुत्रइच कन्यका।
ऋत्विक् शिष्यो गुरुर्भ्राता भगिनेयः सुता पतिः॥

–स्मृत्यर्थ सार

उपर्युक्त दोनों श्लोकों का भावार्थ यह है कि यदि यजमान हवन के समय किसी कारण उपस्थित न हो सके तो उसकी पत्नी, पुत्र, कन्या, शिष्य, गुरु, भाई आदि कर लेवें।

आहुरप्युत्तमस्त्रीणाम् अधिकार तु वैदिके।
यथोर्वशी यमी चैव शच्याद्यश्च तथाऽपराः॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

श्रेष्ठ स्त्रियों को वेद का अध्ययन तथा वैदिक कर्मकांड करने का वैसे ही अधिकार है जैसे कि उर्वशी, यमी, शची आदि ऋषिकाओं को प्राप्त था।

अग्निहोत्रस्य शुश्रूषा सन्ध्योपासनमेव च।

इस श्लोक में स्त्रियों को यज्ञोपवीत एवं सन्ध्योपासन का प्रत्यक्ष विधान है।

या स्त्री भर्ता वियुक्तापि स्वाचा रे संयुता शुभा।
सा च मन्त्रान प्रगृह्णातु स भर्त्री तदनुज्ञया॥

–भविष्य पुराण उत्तर पर्व ४। १३। ६२–६३

उत्तम आचरण वाली विधवा स्त्री वेद मंत्रों को ग्रहण करे और सधवा स्त्री अपने पति की अनुमति से मंत्रों को ग्रहण करे।

यथाधिकारः श्रौतेषु योषितां कर्म सुश्रुतः।
एवमेवानुमन्यम्ब ब्रह्माणि ब्रह्मावादिताम्॥

–यम स्मृति

जिस प्रकार स्त्रियों को वेद के कर्मों में अधिकार है वैसे ही ब्रह्मविद्या प्राप्त करने का भी उन्हें अधिकार है।

कात्यायनी च मैत्रेयी गार्गी वाचक्नवी तथा।
एवमाह्य विदुर्ब्रह्म तस्मात् स्त्री ब्रह्मविद् भवेत्॥

–अस्द्य वामीय भाष्यम्

जैसे कात्यायनी, मैत्रेयी, वाचक्नवी, गार्गी आदि ब्रह्म (वेद और ईश्वर) को जानने वाली थीं, वैसे ही सब स्त्रियों को ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

वाल्मीकि रामायण में कौशिल्या, कैकेयी, सीता, तारा आदि नारियों द्वारा वेद मंत्रों का उच्चारण, अग्निहोत्र, सन्ध्योपासना का वर्णन आता है।

सन्ध्याकाले मनःश्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

नदी चेमां शुभ जलां सन्ध्यार्थे वर वर्णिनी॥

–वा० रा० ५। १५। ४८

सायंकाल के समय इस उत्तम जल वाली नदी के तट पर सन्ध्या करने जानकी अवश्य आएगी।

वैदेही शोकसन्तप्ता हताशनमुपागतम्।

–वाल्मीकि सुन्दर ५३। २३

अर्थात्–तब शोक, संतप्त सीताजी ने हवन किया।

'तदा सुमंत्रं मंत्रज्ञा कैकेयी प्रत्युवाच'

वेद मंत्रों को जानने वाली कैकेयी ने सुमंत से कहा–

सा क्षोभवसना हृष्टा नित्य व्रत परायणा।
अग्नि जुहोतिस्य तदा मन्त्रवित्कृत मंगला॥

–वा० रा० २। २०। १५

वेद मंत्रों को जानने वाली, व्रत परायण, प्रसन्न मुख, सुवेशी कौशिल्या मंगलपूर्वक अग्निहोत्र कर रही थी।

ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मंत्रविद विजयैषिणी।

–वा० रा० ४। १६। १२

तब मंत्रों को जानने वाली तारा ने अपने पति वाली की विजय के लिए स्वस्तिवाचक मंत्रों का पाठ करके अंतःपुर में प्रवेश किया।

गायत्री मंत्र के अधिकार के संबंध में तो ऋषियों ने और भी स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है। नीचे के दो स्मृति प्रमाण देखिए जिनमें स्त्रियों को गायत्री उपासना का विधान किया गया है।

पुराकल्पेतु नारीणां मौञ्जीबंधनमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्री वाचनं तथा॥

–यमस्मृति

प्राचीन समय में स्त्रियों को मौञ्जी बंधन, वेदों का पढ़ना

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तथा गायत्री का उपदेश इष्ट था।

मनसा भर्तुरभिचारे त्रिरात्रं यावकं क्षीरौदनं वा भुञ्जनाऽध शयीत उर्ध्व त्रिरात्रादप्सु निमग्नायाः सावित्र्यिष्टशतेन शिरोभि र्जुहूयात् पूता भवतीति विज्ञायते।

—वशिष्ठ स्मृति २१ ।७

यदि स्त्री के मन में पति के प्रति दुर्भाव आवे तो उस पाप का प्रायश्चित करने के साथ १०८ मंत्र गायत्री के जपने से वह पवित्र होती है।

इतने पर भी कोई यह कहे कि स्त्रियों को गायत्री का अधिकार नहीं तो उसे दुराग्रह या कुसंस्कार ही कहना चाहिए।

नारी पर प्रतिबंध और लांछन क्यों ?

गायत्री उपासना का अर्थ है ईश्वर को माता मानकर उसकी गोदी में चढ़ना। संसार में जितने संबंध हैं, रिश्ते हैं, उन सबमें माता का रिश्ता अधिक प्रेमपूर्ण, अधिक घनिष्ठ है। प्रभु को जिस दृष्टि से हम देखते हैं, हमारी भावना के अनुरूप वैसे ही वे प्रत्युत्तर देते हैं। जब ईश्वर की गोदी में जीव मातृ–भावना के साथ चढ़ता है, तो निश्चय ही उधर से वात्सल्यपूर्ण उत्तर मिलता है।

स्नेह, वात्सल्य, करुणा, दया, ममता, उदारता, कोमलता आदि तत्व नारी में नर की अपेक्षा स्वभावतः अधिक होते हैं, ब्रह्म का अर्ध वामांग, ब्राह्मी तत्व अधिक कोमल, आकर्षक एवं शीघ्र द्रवीभूत होने वाला है। इसलिए अनादिकाल से ऋषि लोग ईश्वर की मातृ भावना के साथ उपासना करते रहे हैं और उन्होंने प्रत्येक भारतीय धर्मावलम्बी को इसी सुख साध्य एवं शीघ्र सफल होने वाली साधना–प्रणाली को अपनाने का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

आदेश दिया है। गायत्री उपासना प्रत्येक भारतीय का धार्मिक नित्य कर्म है। सन्ध्यावंदन किसी पद्धति से किया जाता हो, उसमें गायत्री का होना आवश्यक है। विशेष लौकिक या पारलौकिक प्रयोजन के लिए विशेष रूप से गायत्री की उपासना की जाती है, पर उतना न हो सके तो, नित्य कर्म की साधना तो दैनिक कर्तव्य है, उसे न करने से धार्मिक कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने का दोष है।

कन्या और पुत्र दोनों ही माता की प्राणप्रिय संतान हैं। ईश्वर को नर और नारी दोनों दुलारे हैं। कोई भी निष्पक्ष और न्यायशील माता–पिता अपने बालकों में इसलिए भेदभाव नहीं करते कि वे कन्या हैं या पुत्र हैं। ईश्वर ने धार्मिक कर्त्तव्यों एवं आत्म–कल्याण के साधनों की नर और नारी दोनों को ही सुविधा दी है। यह समता, न्याय और निष्पक्षता की दृष्टि से उचित है, तर्क और प्रमाणों से सिद्ध है। इस सीधे–सीधे तथ्य में कोई विघ्न डालना असंगत ही होगा।

मनुष्य की समझ बड़ी विचित्र है, उसमें कभी–कभी ऐसी बातें भी घुस जाती हैं जो सर्वथा अनुचित एवं अनावश्यक होती हैं। प्राचीन काल में नारी जाति का समुचित सम्मान रहा पर एक ऐसा समय भी आया जब स्त्री जाति को सामूहिक रूप से हेय, पतित, त्याज्य, पातकी, अनधिकारी व घृणित ठहराया गया। उस विचारधारा ने नारी के मनुष्योचित अधिकारों पर आक्रमण किया पुरुष की श्रेष्ठता एवं सुविधा का पोषण करने के लिए उस पर अनेक प्रतिबंध लगाकर शक्तिहीन, साहसहीन, विद्याहीन बनाकर इतना लुञ्ज–पुञ्ज कर दिया कि बेचारी समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकना तो दूर आत्म–रक्षा के लिए भी दूसरों की मोहताज हो गई। आज भारतीय–नारी, पालतू पशु–पक्षियों जैसी स्थिति में पहुँच गई। इसका कारण

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वह उल्टी समझ ही है, जो मध्यकाल के सामंतशाही अहंकार के साथ उत्पन्न हुई थी। प्राचीन काल में भारतीय नारी सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समकक्ष थी। रथ के दोनों पहिए ठीक होने से समाज की गाड़ी उत्तमता से चल रही थी, पर अब एक पहिया क्षत–विक्षत हो जाने से दूसरा पहिया भी लड़खड़ा गया है। अयोग्य नारी–समाज का भार नर को ढोना पड़ रहा है। इस अव्यवस्था ने हमारे देश और जाति को कितनी क्षति पहुँचाई है उसकी कल्पना भी कष्टसाध्य है।

मध्यकालीन अंधकार युग की कितनी ही बुराइयों को सुधारने के लिए विवेकशील और दूरदर्शी महापुरुष प्रयत्नशील हैं यह प्रसन्नता की बात है। विज्ञ पुरुष यह अनुभव करने लगे हैं कि मध्यकालीन संकीर्णता की लौह–शृंखला से नारी को न खोला गया तो हमारा राष्ट्र प्राचीन गौरव को प्राप्त नहीं कर सकता। पूर्वकाल में नारी जिस स्वस्थ स्थिति में थी उसी स्थिति में पूर्वकाल में पहुँचाने से हमारा आधा अंग विकसित हो सकेगा और तभी हमारा सर्वांगीण विकास हो सकेगा। इन शुभ प्रयत्नों में मध्यकालीन कुसंस्कारों की रूढ़ियों का अंधानुकरण करना ही धर्म समझ बैठने वाली विचारधारा अब भी रोड़ें अटकाने से नहीं चूकती।

ईश्वर–भक्ति गायत्री की उपासना तक के बारे में यह कहा जाता है कि इसका स्त्रियों को अधिकार नहीं। इसके लिए कई पुस्तकों के श्लोक भी प्रस्तुत किए जाते हैं, जिनमें यह कहा गया है कि–स्त्रियाँ वेदमंत्रों को न पढ़ें, न सुनें क्योंकि गायत्री भी वेद मंत्र है इसलिए स्त्रियाँ उसे न अपनावें। इन प्रमाणों से हमें कोई विरोध नहीं क्योंकि एक काल भारतवर्ष में ऐसा बीता है, जब नारी को निकष्ट कोटि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

के जीव की तरह समझा गया है। यूरोप में तो उस समय यह मान्यता थी कि घास–पात की तरह स्त्रियों में 'आत्मा' नहीं होती। यहाँ भी उनसे मिलती जुलती ही मान्यता बना ली गई। कहा जाता था कि–

निरिन्द्रयाह्य मंत्राश्च स्त्रियोऽनतमिति स्थिति:।

अर्थात्–स्त्रियों के इंद्रियाँ नहीं होतीं। ये मंत्र रहिता, असत्य स्वरूपिणी एवं घृणित हैं। स्त्री को ढोल, गँवार, शूद्र और पशु की तरह पिटने योग्य ठहराने वाले विचारकों का कहना था कि–

''पौंश्चल्याच्चल चित्ताच्च नै स्नेह्याच्च स्वभावत:।
रक्षिता यत्र तोऽवीह भर्तृप्वेता विकुर्वते॥''

अर्थात्–स्त्रियाँ स्वभावृतया ही व्यभिचारिणी, चंचलचित, प्रेम–शून्य होती हैं। उनकी बड़ी होशियारी के साथ देखभाल रखनी चाहिए।

विश्वास पात्र न किमस्ति नारी।
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी॥
विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा।
नार्या पिशाच्या न च वंचितो य:॥

प्रश्न–विश्वास करने योग्य कौन नहीं है ? उत्तर–नारी। प्रश्न–नरक का एकमात्र द्वार क्या है ? उत्तर–नारी। प्रश्न–बुद्धिमान कौन है ? उत्तर–जो नारी रूपी पिशाचिनी से नहीं ठगा गया।

जब स्त्रियों के संबंध में ऐसी मान्यता फैली हुई हो तो उन्हें वेदशास्त्रों से, धर्म–कर्त्तव्यों से, 'ज्ञान–उपार्जन' से वंचित रहने का प्रतिबंध लगाया गया हो इसमें कुछ आश्चर्य की बात नहीं है। इस प्रकार के प्रतिबंध सूचक अनेक श्लोक उपलब्ध होते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनां त्रयी न श्रुति गोचरा।

—भागवत

अर्थात्— स्त्रियों, शूद्रों और नीच ब्राह्मणों को वेद सुनने का अधिकार नहीं है।

अमंत्रिका तुकार्येय स्त्रीणामावृदशेषत:।
संस्कारार्थ शरीरस्य यथा काले यथा क्रमम्॥

—मनु० २। ६६

अर्थात्—स्त्रियों के जातकर्मादि सब संस्कार बिना वेद मंत्रों के करने चाहिए।

''नन्वेध सति स्त्री शूद्र सहिता: सर्वे वेदाधिकारिणा:।''

—सायण

स्त्री और शूद्रों को वेद का अधिकार नहीं है।

''वेदेऽनधिकारात्'' —शंकराचार्य

स्त्रियाँ वेद की अधिकारिणी नहीं।

अध्ययन रहतिया स्त्रिया तदनुष्ठानमशक्य।
त्वात् तस्मात् पुंस एवोपस्थानादिकम्॥

—माधवाचार्य

स्त्री अध्ययन रहित होने के कारण यज्ञ में मंत्रोच्चारण नहीं कर सकतीं। इसलिए केवल पुरुष मंत्र पाठ करें।

'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्।'

अर्थ—स्त्री और शूद्र वेद न पढ़ें।

'न वै कन्या न युवती:।'

अर्थ—न कन्या पढ़े, न स्त्री पढ़े।

इस प्रकार के स्त्रियों को धर्म, ज्ञान, ईश्वर उपासना और आत्म—कल्याण से रोकने वाले प्रतिबंधों को कई भोले मनुष्य 'सनातन' मान लेते हैं और उनका समर्थन करने लगते हैं। ऐसे लोगों को जानना चाहिए कि प्राचीन

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

साहित्य में इस प्रकार के प्रतिबंध कहीं नहीं हैं, वरन् उसमें तो सर्वत्र नारी की महानता का वर्णन है और उसे भी पुरुष जैसे सब धार्मिक अधिकार प्राप्त हैं। यह प्रतिबंध तो कुछ काल तक कुछ व्यक्तियों की एक सनक के प्रमाण मात्र हैं। ऐसे लोगों ने धर्म ग्रंथों में जहाँ–तहाँ अनर्गल श्लोक ठूँसकर अपनी सनक को ऋषि प्रणीत सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।

भगवान् मनु ने नारी जाति की महानता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करते हुए लिखा है–

प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः।
स्त्रियः श्रियाश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चनः॥

–मनु० ९। २६

अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रुषा रतिरुत्तमा।
दाराधीनस्त स्वर्गः पितृणामात्मनश्चह॥

–मनु० ९। २८

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रै तास्तु न पूज्यन्ते सर्वा तत्राफलाः क्रियाः॥

–मनु० ३। ५६

अर्थात् स्त्रियाँ पूजा के योग्य हैं, महाभाग हैं, घर की दीप्ति हैं। कल्याणकारिणी हैं। धर्म कार्यों की सहायिका हैं। स्त्रियों के अधीन ही स्वर्ग है। जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ उनका तिरस्कार होता है वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं।

जिस मनु भगवान् की श्रद्धा नारी जाति के प्रति इतनी उच्चकोटि की थी, उन्हीं के ग्रंथ में यत्र–तत्र स्त्रियों की भरपेट निंदा और उनको धार्मिक सुविधा का निषेध है। मनु जैसे महापुरुष ऐसी परस्पर विरोधी बातें नहीं लिख सकते। निश्चय ही उनके ग्रंथों में पीछे वाले लोगों

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

ने मिलावट की है। इस मिलावट के प्रमाण भी मिलते हैं। देखिए–

मान्या कापि मनुस्मृतिस्तदुचिंता व्याख्यापि मेधातिथे।
सा लुप्तै विधेवशात्क्वचिदपि प्राप्यं न तत्पुस्तकम्॥
क्षोणीन्द्रो मदन सहारण सुतो देशान्तरादाहृतै।
जीर्णोद्धारमचीकरत् तत इतस्तत्पुस्तकैलिखितेः॥

–मेधातिथिरचित मनुभाष्य सहित मनुस्मृतेरुपोद्घातः

अर्थात्–प्राचीन काल में कोई प्रामाणिक मनुस्मृति थी और उसकी मेधातिथि ने उचित व्याख्या की थी। दुर्भाग्यवश वह पुस्तक लुप्त हो गई, तब राजा मदन ने इधर–उधर की पुस्तकों से उसका जीर्णोद्धार कराया।

केवल मनुस्मृति तक यह घोटाला सीमित नहीं है वरन् अन्य ग्रंथों में भी ऐसी मिलावट की गई है और अपनी मनमानी को शास्त्र–विरुद्ध होते हुए भी 'शास्त्र वचन' सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है।

दैत्या सर्वे विप्रकुलेषु भूत्वा, कलौ युगे भारते षट सहस्रयाम्।
निष्कास्य कांश्चिन्नवनिर्मितानां निवेशनं तत्र कुर्वन्ति नित्यम्॥

–गरुड़ पुराण ब्रह्म १। ५। ९

''राक्षस लोग कलियुग में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर महाभारत के छः हजार श्लोकों में से अनेक श्लोकों को निकाल देंगे और उनके स्थान पर नए कृत्रिम श्लोक गढ़कर प्रक्षेप कर देंगे।'' यही बात माधवाचार्य जी ने इस प्रकार कही है–

क्वचिद ग्रंथान प्रक्षिपन्ति क्वचिदन्तरितानपि।
कुर्युः क्वचिच्च व्यत्यासं प्रमादात् क्वचिदन्य॥

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अनुत्सन्ना: अपि ग्रंथा व्याकुला इति सर्वश:।

''स्वार्थी लोग कहीं ग्रंथों के वचनों को प्रक्षिप्त कर देते हैं कहीं निकाल देते हैं, कहीं जान–बूझकर, कहीं प्रमाद से उन्हें बदल देते हैं, इस प्रकार प्राचीन ग्रंथ बड़े अस्त–व्यस्त हो गए हैं।''

जिन दिनों यह मिलावट की जा रही थी, उन दिनों भी विचारवान् विद्वानों ने इस गड़बड़ी का डटकर विरोध किया था। महर्षि हारीत ने इस स्त्री द्वेषी ऊल–जलूल उक्तियों का घोर विरोध करते हुए कहा था–

न शूद्र समा: स्त्रिय:। नहि शूद्र योनौ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्या जायन्ते तस्माच्छन्दसास्त्रिय संस्कार्या:।

–हारीत

'स्त्रियाँ शूद्रों के समान नहीं हो सकतीं। शूद्र–योनि से भला ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों की उत्पत्ति किस प्रकार हो सकती है ? स्त्रियों को वेद द्वारा संस्कृत करना चाहिए।'

नर और नारी एक ही रथ के दो पहिए हैं, एक ही शरीर की दो भुजाएँ हैं, एक ही शरीर के दो हाथ हैं, एक ही मुख के दो नेत्र हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण है। दोनों अर्द्धांगों के मिलने से एक पूर्ण अंग बनता है। मानव प्राणी के अविच्छिन्न दो भागों में इस प्रकार की असमानता, द्विधा, नीच–ऊँच की भावना पैदा करना भारतीय परंपरा के सर्वथा विपरीत है। भारतीय धर्म में सदा नर–नारी को एक और अविच्छिन्न अंग माना है।

यथैवात्मा तथा पुत्र: पुत्रेण दुहिता समा।

–मनु० ९। १३०

''आत्मा के समान ही पुत्र है। जैसा पुत्र वैसी ही कन्या दोनों समान हैं।''

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

एतावानेव पुरुषो यजायात्मा प्रजेति ह।
विप्राः प्राहुस्तथा चैतद्यो भर्त्ता सास्मृतांगना॥

–मनु० ९। ४५

''पुरुष अकेला नहीं होता, किंतु स्वयं पत्नी और संतान मिलकर पुरुष बनता है।''

''अथो अर्द्धो वा एष आत्मनः यत् पत्नी''

अर्थात्–पत्नी पुरुष का आधा अंग है।

ऐसी दशा में यह उचित नहीं कि नारी को प्रभु की वाणी वेद ज्ञान से वंचित रखा जाए। अन्य मंत्र की तरह गायत्री का भी उसे पूरा अधिकार है। ईश्वर की हम नारी के रूप में, गायत्री के रूप में, उपासना करें और फिर नारी जाति को घृणित, पतित, अस्पर्श्या, अनाधिकारिणी ठहराएँ, यह कहाँ तक उचित है इस पर हमें स्वयं ही विचार करना चाहिए।

स्त्रियों को वेदाधिकार वंचित रखने तथा उन्हें उसकी अनधिकारिणी मानने से उनके संबंध में स्वभावतः एक प्रकार की हीन भावना पैदा हो जाती है, जिनका दूरवर्ती घातक परिणाम हमारे सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास पर पड़ता है। यों तो वर्तमान समय में अधिकांश पुरुष भी वेदों से अपरिचित हैं और उनके संबंध में ऊट–पटांग बातें करते रहते हैं, पर किसी समुदाय को सिद्धांत रूप से अनाधिकारी घोषित कर देने पर परिणाम हानिकारक ही निकलता है। इसलिए वितण्डावादियों के कथनों का ख्याल न करके हमको स्त्रियों के प्रति किए गए अन्याय का अवश्य ही निराकरण करना चाहिए।

वेद–ज्ञान सबके लिए है, नर–नारी सभी के लिए है। ईश्वर अपनी संतान को जो संदेश देता है उसे सनने पर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रतिबंध लगाना ईश्वर के प्रति द्रोह करना है, वेद भगवान् स्वयं कहते हैं–

समानो मंत्र समिति समानी समान मनः सहचित्तमेषाम्।
समान मंत्रमभिमंत्रये वः समाने न वो हविषा जुहोमि॥

–ऋग्वेद १०।११।३

अर्थ–समस्त नर–नारियों ! तुम्हारे लिए मंत्र समान रूप से दिए गए हैं तथा तुम्हारा परस्पर विचार भी समान रूप से हो। तुम्हारी सभाएँ सबके लिए समान रूप से खुली हुई हों। तुम्हारा मन और चित्त समान तथा मिला हुआ हो। मैं तुम्हें समान रूप से मंत्रों का उपदेश करता और समान रूप से ग्रहण करने योग्य पदार्थ देता हूँ।

मालवीयजी द्वारा निर्णय

स्त्रियों को वेद–मंत्रों का अधिकार है या नहीं, इस प्रश्न को लेकर काशी के पंडितों में पर्याप्त विवाद हो चुका है। हिंदू विश्व–विद्यालय काशी में कुमारी कल्याणी नामक छात्रा वेद कक्षा में प्रविष्ट होना चाहती थी, पर प्रचलित मान्यता के आधार पर विश्व–विद्यालय ने उसे दाखिल करने से इंकार कर दिया। अधिकारियों का कथन था कि शास्त्रों में स्त्रियों को वेद–मंत्रों का अधिकार नहीं दिया गया है।

इस विषय को लेकर पत्र–पत्रिकाओं में बहुत दिन विवाद चला। वेदाधिकार के समर्थन में ''सार्वदेशिक'' पत्र ने कई लेख छापे और विरोध में काशी के सिद्धांत पत्र में कई लेख प्रकाशित हुए। आर्य समाज की ओर से एक डेपूटेशन हिंदू विश्व–विद्यालय के अधिकारियों से मिला। देश भर में इस प्रश्न को लेकर काफी चर्चा हुई।

अंत में विश्व–विद्यालय ने महामना मदनमोहन मालवीय

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की अध्यक्षता में इस प्रश्न पर विचार करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की जिसमें अनेक धार्मिक विद्वान सम्मिलित किए गए। कमेटी ने इस संबंध में शास्त्रों का गंभीर विवेचन करके यह निष्कर्ष निकाला कि स्त्रियों को भी पुरुषों की भाँति वेदाधिकार है। इस निर्णय की घोषणा २२ अगस्त १९४६ को सनातन धर्म के प्राण समझे जाने वाले महामना मालवीय जी ने की। तदनुसार कुमारी कल्याणी देवी को हिंदू विश्व–विद्यालय की वेद कक्षा में दाखिल कर लिया गया और शास्त्रीय आधार पर निर्णय किया कि विश्व–विद्यालय में स्त्रियों के वेदाध्ययन पर कोई प्रतिबंध न रहेगा। स्त्रियाँ भी पुरुषों की भाँति वेद पढ़ सकेंगी।

महामना मालवीय जी तथा उनके सहयोगी अन्य विद्वानों पर कोई सनातन धर्म विरोधी होने का संदेह नहीं कर सकता। सनातन धर्म में उनकी आस्था प्रसिद्ध है। ऐसे लोगों द्वारा इस प्रश्न को सुलझा दिए जाने पर जो लोग गड़े मुर्दे उखाड़ते हैं और कहते हैं कि स्त्रियों को गायत्री अधिकार नहीं है, उनकी बुद्धि के लिए क्या कहा जाए ? समझ में नहीं आता।

पं० मदनमोहन जी मालवीय धर्म के प्राण थे। उनकी शास्त्रज्ञता, विद्वत्ता, दूरदर्शिता एवं धार्मिक दृढ़ता असंदिग्ध थी। ऐसे महापंडित ने अन्य अनेकों प्रामाणिक विद्वानों के परामर्श से स्वीकार किया है, उस निर्णय पर भी जो लोग संदेह करते हैं उनकी हठधर्मी को दूर करना स्वयं ब्रह्माजी के लिए भी कठिन है।

खेद है कि ऐसे लोग समय की गति को भी नहीं देखते, हिंदू समाज की गिरती हुई संख्या और शक्ति पर भी जो ध्यान नहीं देते, केवल दस–बीस कल्पित या मिलावटी श्लोकों को लेकर देश तथा समाज का अहित करने पर उतारू हो जाते

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हैं। प्राचीन काल की अनेक विदुषी स्त्रियों के नाम अभी तक संसार में प्रसिद्ध हैं, वेदों में बीसियों स्त्री–ऋषियों का उल्लेख मंत्र रचयिता के रूप में लिखा मिलता है, पर ऐसे लोग उधर दृष्टिपात न करके मध्यकाल में ऋषियों के नाम पर स्वार्थी लोगों द्वारा लिखी पुस्तकों के आधार पर समाज सुधार के पुनीत कार्य में व्यर्थ ही टाँग अड़ाया करते हैं। ऐसे व्यक्तियों की उपेक्षा करके वर्तमान युग के ऋषि मालवीय जी की सम्मति का अनुसरण करना ही समाज सेवकों का कर्त्तव्य है।

स्त्रियाँ अनधिकारिणी नहीं हैं

पिछले पृष्ठों पर शास्त्रों के आधार पर जो प्रमाण उपस्थित किए गए हैं, पाठक उनमें से हरएक पर विचार करें। हर विचारवान को यह सहज ही प्रतीत हो जाएगा कि वेद शास्त्रों में ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं है, जो धार्मिक कार्यों के लिए, सद्ज्ञान–उपार्जन के लिए, वेद–शास्त्रों का श्रवण, मनन करने के लिए रोकता हो। हिंदू–धर्म, वैज्ञानिक धर्म है, विश्व–धर्म है। इसमें ऐसी विचारधारा के लिए कोई स्थान नहीं है, जो स्त्रियों को धर्म, ईश्वर, वेद विद्या आदि के उत्तम मार्ग से रोककर उन्हें अवनत अवस्था में पड़े रहने के लिए विवश करे। प्राणिमात्र पर अनंत दया एवं करुणा रखने वाले ऋषि मुनि ऐसे निष्ठुर नहीं हो सकते, जो ईश्वरीय ज्ञान वेद से स्त्रियों को वंचित रखकर उन्हें आत्म–कल्याण के मार्ग पर चलने से रोकें। हिंदू–धर्म अत्यधिक उदार है। विशेषतया स्त्रियों के लिए तो उसमें बहुत ही आदर, श्रद्धा एवं उच्च स्थान है। ऐसी दशा में यह कैसे हो सकता है कि गायत्री उपासना जैसे उत्तम कार्य के लिए

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उन्हें अयोग्य घोषित किया जाए।

जहाँ–तहाँ दस–पाँच ऐसे भी श्लोक मिलते हैं जो स्त्रियों को वेद–शास्त्र पढ़ने से रोकते हैं। पंडित समाज में उन पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रारंभ में बहुत समय तक हमारी भी ऐसी ही मान्यता रही कि स्त्रियाँ वेद न पढ़ें। परंतु जैसे–जैसे शास्त्रीय खोज में अधिक गहरा प्रवेश करने का अवसर मिला, वैसे–वैसे पता चला कि वे प्रतिबंधक श्लोक बनाकर ग्रंथों में मिला दिए गए हैं। सत्य सनातन वेदोक्त भारतीय धर्म की वास्तविक विचार धारा स्त्रियों पर कोई बंधन नहीं लगाती। उसमें पुरुषों की भाँति ही स्त्रियों को भी ईश्वर उपासना एवं वेद–शास्त्रों का आश्रय लेकर आत्म लाभ करने की पूरी–पूरी सुविधा है।

प्रतिष्ठित गण्यमान्य विद्वानों की भी ऐसी सम्मति है। साधना और योग की प्राचीन परंपराओं के जानकार महात्माओं का कथन भी यही है कि स्त्रियाँ सदा से गायत्री की अधिकारिणी रही है। स्वर्गीय मालवीय जी सनातन धर्म के प्राण थे। पहले उनके हिंदू विश्व–विद्यालय में स्त्रियों को वेद पढ़ने की रोक थी, पर जब उन्होंने विशेष रूप से पंडित मंडली के सहयोग से इस संबंध में स्वयं खोज की तो वे भी निष्कर्ष पर पहुँचे कि शास्त्रों में स्त्रियों के लिए कोई प्रतिबंध नहीं है। उन्होंने रूढ़िवादी लोगों के विरोध की रत्तीभर भी परवाह न करके हिंदू विश्व–विद्यालय में स्त्रियों को वेद पढ़ने की खुली व्यवस्था कर दी।

अब भी कई महानुभाव यह कहते हैं कि–स्त्रियों को वेद या गायत्री का अधिकार नहीं है। ऐसे लोगों की आँखें खोलने के असंख्य प्रमाणों में से ऐसे कुछ थोड़े से प्रमाण इस पुस्तक में प्रस्तुत किए गए हैं। संभव है जानकारी के

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अभाव में किसी को विरोध रहा हो। दुराग्रह से कभी किसी विवाद का अंत नहीं होता। अपनी ही बात को सत्य सिद्ध करने के लिए हठ ठानना अशोभनीय है। विवेकवान् व्यक्तियों का सदा यही सिद्धांत रहता है कि 'जो सत्य सो हमारा' अविवेकी मनुष्य 'जो हमारा सो सत्य' सिद्ध करने के लिए वितंडा खड़ा करते हैं।

विचारवान् व्यक्तियों का अपने आप से एकांत स्थान में बैठकर यह प्रश्न करना चाहिए। (१) यदि स्त्रियों को गायत्री या वेद मंत्रों का अधिकार नहीं तो प्राचीन काल में स्त्रियाँ वेदों की दृष्टाएँ–ऋषिका क्यों हुईं ? (२) यदि वेद की वे अधिकारिणी नहीं तो यज्ञ आदि धार्मिक कृत्यों तथा षोड्श संस्कारों में उन्हें सम्मिलित क्यों किया जाता है ? (३) विवाह आदि अवसरों पर स्त्रियों के मुख से वेद मंत्रों का उच्चारण क्यों कराया जाता है ? (४) बिना वेद मंत्रों के नित्य संन्ध्या और हवन स्त्रियाँ कैसे कर सकती हैं ? (५) यदि स्त्रियाँ अनाधिकारिणी थीं तो अनुसूया, अहिल्या, अरुन्धती, मैत्रेयी, मदालसा आदि अगणित स्त्रियाँ वेद शास्त्रों में पारंगत कैसे थीं ? (६) ज्ञान, धर्म और उपासना के स्वाभाविक अधिकारों से नारियों को वंचित करना क्या अन्याय एवं पक्षपात नहीं है ? (७) क्या नारी को आध्यात्मिक दृष्टि से अयोग्य ठहराकर उनसे उत्पन्न होने वाली संतान धार्मिक हो सकती है ? (८) जब स्त्री पुरुष की अर्धांगिनी है, तो आधा अंग अधिकारी आधा अनाधिकारी किस प्रकार रहा ?

इन प्रश्नों पर विचार करने से हर एक निष्पक्ष व्यक्ति की अंतरात्मा यही उत्तर देगी कि स्त्रियों पर धार्मिक अयोग्यता का प्रतिबंध लगाना किसी प्रकार भी न्याय संगत नहीं हो सकता। उन्हें भी गायत्री आदि मंत्रों का पुरुषों की भाँति ही

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अधिकारी होना चाहिए। हम स्वयं भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। हमें ऐसी पचासों स्त्रियों का परिचय है, जिनने श्रद्धापूर्वक वेदमाता गायत्री की उपासना की है और पुरुषों से भी अधिक एवं शीघ्र सफलताएँ मिलीं। कन्याएँ उत्तम घर वर प्राप्त करने में, सधवाएँ पति का सुख सौभाग्य एवं सुसंतति के संबंध में और विधवाएँ संयम तथा धर्म उपार्जन में आशाजनक सफल हुई हैं।

आत्मा न स्त्री है न पुरुष। वह विशुद्ध ब्रह्म–ज्योति की चिनगारी है। आत्मिक प्रकाश प्राप्त करने के लिए जैसे पुरुष को किसी गुरु या पथ–प्रदर्शक की आवश्यकता होती है, वैसे ही स्त्री को भी होती है। तात्पर्य यह है कि साधना क्षेत्र में पुरुष स्त्री का भेद नहीं। साधक 'आत्मा' है। उन्हें अपने को पुरुष स्त्री न समझकर आत्मा समझना चाहिए। साधना–क्षेत्र में अभी आत्माएँ समान हैं। लिंग भेद के कारण कोई अयोग्यता उन पर नहीं थोपी जानी चाहिए।

पुरुषों की अपेक्षा स्वभावतः स्त्री में धार्मिक तत्वों की मात्रा अधिक होती है। पुरुषों पर बुरे वातावरण एवं व्यवहार की छाया अधिक पड़ती है, जिससे बुराइयाँ अधिक हो जाती हैं। आर्थिक संघर्ष में रहने के कारण चोरी–बेईमानी आदि के अवसर भी उसके सामने आते हैं, पर स्त्रियों का कार्य–क्षेत्र बड़ा सरल, सीधा और सात्विक है। घर में जो कार्य करना पड़ता है उसमें सेवा की मात्रा ही अधिक रहती है। वे आत्म–निग्रह करती हैं, कष्ट सहती हैं, पर बच्चों के प्रति, पतिदेव के प्रति, सास–ससुर, देवर–जेठ आदि सभी के प्रति अपने व्यवहार को सौम्य, सेवापूर्ण, उदार, शिष्ट एवं सहिष्णु रखती हैं। उनकी दिनचर्या सतोगुणी होती है, जिसके कारण उनकी अंतरात्मा पुरुषों की अपेक्षा कहीं

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अधिक पवित्र रहती है। चोरी, हत्या, ठगी, धूर्तता, शोषण, निष्ठुरता, व्यसन, अहंकार, असंयम, असत्य आदि दुर्गुण पुरुष में ही प्रधानतः पाए जाते हैं। स्त्रियों में इस प्रकार के पाप बहुत ही कम देखने में आते हैं। यों तो फैशनपरस्ती, अशिष्टता, कर्कशता, श्रम से जी चुराना आदि छोटी–छोटी बुराइयाँ अब स्त्रियों में भी बढ़ने लगी हैं, परंतु पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ निस्संदेह अनेक गुनी अधिक सद्गुणी हैं, उनकी बुराइयाँ अपेक्षाकृत बहुत ही सीमित हैं।

ऐसी स्थिति में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में धार्मिक प्रवृत्ति का अधिक होना स्वाभाविक ही है। उसकी मनोभूमि में धर्म का बीजांकुर अधिक जल्दी जमता और फलता–फूलता है। अवकाश रहने के कारण वे घर में पूजा आराधना की नियमित व्यवस्था भी कर सकती हैं। अपने बच्चों पर धार्मिक संस्कार अधिक अच्छी तरह से डाल सकती हैं। इन सब बातों को देखते हुए महिलाओं को धार्मिक साधना के लिए उत्साहित करने की आवश्यकता है। इसके विपरीत उन्हें नीच, अनाधिकारिणी, शूद्रा आदि कहकर उनके मार्ग में रोड़े खड़े करना, निरुत्साहित करना किस प्रकार उचित है, यह समझ में नहीं आता।

महिलाओं के वेद–शास्त्र अपनाने एवं गायत्री साधना करने के असंख्य प्रमाण धर्म–ग्रंथों में भरे पड़े हैं, उनकी ओर से आँखें बंद करके, किन्हीं दो–चार प्रक्षिप्त श्लोकों को पकड़ बैठना और उन्हीं के आधार पर स्त्रियों को अनाधिकारिणी ठहराना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है। धर्म की ओर एक तो वैसे ही किसी की प्रवृत्ति नहीं है फिर किसी को उत्साह और सुविधा हो तो उसे अनाधिकारिणी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

घोषित करके ज्ञान और उपासना का रास्ता बंद कर देना कोई विवेकशीलता नहीं।

हमने भली प्रकार खोज, विचार, मनन और अन्वेषण करके यह पूरी तरह विश्वास कर लिया है कि स्त्रियों को पुरुषों की भाँति ही गायत्री का अधिकार है। वे भी पुरुषों की भाँति माता की गोदी में चढ़ने की, उसका अंचल पकड़ने की, उसका पयपान करने की पूर्ण अधिकारिणी हैं। उन्हें सब प्रकार का संकोच छोड़कर प्रसन्नतापूर्वक गायत्री की उपासना करनी चाहिए, इससे उनके भव–बंधन कटेंगे, वे जन्म–मरण की फाँसी से छूटेंगी, जीवन–मुक्ति और स्वर्गीय शांति की अधिकारिणी बनेंगी। साथ ही अपने पुण्य प्रताप से अपने परिजनों के स्वास्थ्य, सौभाग्य, वैभव एवं सुख–संतोष की दिन–दिन वृद्धि करने में महत्वपूर्ण सहयोग दे सकेंगी। गायत्री को अपनाने वाली देवियाँ सच्चे अर्थों में देवी बनती हैं, उनमें अनेक दिव्य गुणों का प्रकाश होता है तदनुसार वे सर्वत्र उसी आदर को प्राप्त करती हैं, जो उनका ईश्वर प्रदत्त जन्मजात अधिकार है।

भूल का सुधारना अनिवार्य

समाज में उत्थान और पतन के जो परिवर्तन हुए हैं उनमें प्रत्यक्ष रूप से पुरुष का ही हस्तक्षेप दिखाई देता है, किंतु यदि गहराई तक विचार करें तो मालूम होगा कि पुरुष केवल ध्वंसात्मक परिवर्तन कर सकता है। अब तक उसे जितनी रचनात्मक प्रेरणाएँ मिली हैं वह नारी ने ही दी हैं। नारी ही बच्चे का–बच्चे से भावी प्रजा और समाज का निर्माण करती है। क्रिया की दृष्टि से बालक पुरुष की अनुकृति हो सकता है, किंतु भावात्मक दृष्टि से वह सदैव नारी की प्रतिकृति होता

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है। किसी देश और समाज की महिलाएँ जितनी उदात्त, शिक्षित और भव्य विचारों वाली होंगी वह समाज भी उतना ही भव्य और प्रकाशवान होगा।

गायत्री जीवन को भव्य बनाने वाली विद्या है। उसकी उपासना से बुद्धि और आत्मा में सतोगुणी प्रकाश की वृद्धि होती है उससे विद्या, बुद्धि, दया, करुणा, प्रेम, उदारता, शौर्य, साहस और पवित्रता आदि गुणों की वृद्धि होती है। जो माताएँ इन गुणों में पारंगत होती हैं उनके बच्चे भी वैसे ही बनते हैं इसलिए जब हम उदात्त और भव्य समाज की कल्पना में दैवी प्रकाश गायत्री तत्व का आह्वान करते हैं तो उसकी आवश्यकता महिलाओं के लिए अधिक होती है। फिर यदि उन्हें उस प्रकाश से वंचित रखा जाए तो कौन बुद्धिमान व्यक्ति होगा जो समाज की सुख–शांति और समृद्धि की आशा करेगा। जड़ को जल से वंचित रखकर वृक्ष के फलने की आशा नहीं की जा सकती। उसी प्रकार नारी शक्ति को दैवी प्रकाश से वंचित रखकर समर्थ समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए नारियों की गायत्री उपासना संबंध भ्रांतियों का परिहार होना ही चाहिए। इन प्रतिबंधों को समाप्त कर उसे समान रूप से उस वेदी पर प्रतिष्ठित करने में न तो भय करना चाहिए न भ्रांति फैलानी चाहिए, जिससे वे भी लोक–कल्याण और आत्म–निर्माण का लक्ष्य पूरा कर सकें।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

गायत्री विद्या सैट

१.	गायत्री साधना और यज्ञ प्रक्रिया	४.००
२.	गायत्री की शक्ति और सिद्धि	४.००
३.	गायत्री की युगांतरीय चेतना	४.००
४.	गायत्री की प्रचंड प्राण ऊर्जा	४.००
५.	गायत्री की उच्चस्तरीय पाँच साधनाएँ	४.००
६.	देवताओं, ऋषियों और अवतारों की उपास्य..	४.००
७.	गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार	४.००
८.	गायत्री का सूर्योपस्थान	४.००
९.	गायत्री और यज्ञ का अन्योन्याश्रित संबंध	४.००
१०.	गायत्री साधना से कुंडलिनी जागरण	४.००
११.	गायत्री का ब्रह्मवर्चस्	४.००
१२.	गायत्री पंचमुखी और एकमुखी	४.००
१३.	महिलाओं की गायत्री उपासना	४.००
१४.	गायत्री के दो पुण्य प्रतीक-शिखा और सूत्र	४.००
१५.	गायत्री का हर अक्षर शक्ति का स्रोत	४.००
१६.	गायत्री साधना की सर्वसुलभ विधि	४.००
१७.	गायत्री पंचरत्न	४.००
१८.	गायत्री के अनुष्ठान और पुरश्चरण साधनाएँ	४.००
१९.	गायत्री की चौबीस शक्तिधाराएँ	४.००
२०.	गायत्री विषयक शंका समाधान	४.००
२१.	गायत्री का वैज्ञानिक आधार	४.००
२२.	गायत्री महाविज्ञान (प्रथम भाग)	२०.००
२३.	गायत्री महाविज्ञान (द्वितीय भाग)	२०.००
२४.	गायत्री महाविज्ञान (तृतीय भाग)	२०.००

संपर्क सूत्र :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

युग निर्माण मिशन-संक्षिप्त परिचय

उद्देश्य : मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण। विचारक्रांति, नैतिक क्रांति, धार्मिक क्रांति एवं सामाजिक क्रांति द्वारा जनमानस का भावनात्मक परिष्कार।

गठन : नव निर्माण के लिए तत्पर नित्य समय दान और अंश दान करने वाले लाखों कर्मनिष्ठों का पारिवारिक संगठन। प्रचारात्मक, रचनात्मक और सुधारात्मक कार्यक्रमों द्वारा मानवीय गरिमा को उभारने वाली गतिविधियों में संलग्न समुदाय।

आधार : सदस्यों का दैनिक श्रमदान एवं अंशदान। नित्य ५० पैसा और २ घण्टे समय का नियमित अनुदान। इसी सामर्थ्य के बलबूते अनेकों महत्त्वपूर्ण गतिविधियों का गत ५० वर्षों से संचालन।

प्रमुख संस्थान : (१) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (२) अखण्ड ज्योति कार्यालय, मथुरा (३) गायत्री शक्तिपीठ, आंवलखेड़ा, आगरा (४) शांतिकुंज, हरिद्वार (५) ब्रह्मवर्चस्, हरिद्वार। भारत एवं विदेश में लगभग ४००० शक्तिपीठ, प्रज्ञापीठ एवं गायत्री परिवार की शाखाओं द्वारा प्रचार प्रसार।

प्रकाशन : युग निर्माण योजना (हिन्दी मासिक), युग शक्ति गायत्री (गुजराती मासिक), अखण्ड ज्योति मासिक एवं अन्य कई पत्रिकाएँ भारत की विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित। विभिन्न विषयों पर पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित लगभग ५०० पुस्तकों का प्रकाशन देश की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में।

गतिविधियाँ एवं प्रचार : धर्म तंत्र से लोकशिक्षण, अग्नि साक्षी में सत्प्रवृत्तियाँ अपनाने के संकल्प, युग निर्माण विद्यालय, मथुरा, नौ दिवसीय साधना सत्र एवं एक मासीय **युग शिल्पी सत्रों** का नियमित आयोजन। टोलियों द्वारा देश-विदेश में मिशन का प्रचार-प्रसार।

कार्यक्षेत्र : समस्त भारतवर्ष एवं विश्व।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.